DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR
B.A –PART 1 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-2 ,UNIT-7,
AGGRESSION:DEFINITION AND NATURE

LECTURE-27

DEFINITION & NATURE OF AGGRESSION

आक्रामकता के परिभाषा एवं स्वरूप

आक्रामकता व्यवहार एक सार्वजनिक घटना है |यह एक ऐसा व्यवहार है जो मनुष्य तथा पशुओं दोनों में पाया जाता है | इसके अध्ययन में समाज मनोवैज्ञानिकों ने विशेष अभिरुचि दिखलायी है |

सर्वप्रथम आक्रामकता की परिभाषा 'बस' (1961) ने दी उनके अनुसार आक्रामकता ऐसी अनुक्रिया है जो दुसरे प्राणी को एक अनिष्टकर उद्दीपक करता है | परन्तु यह परिभाषा अत्यधिक विस्तृत एवं सरल होने के कारण समाज मनोवैज्ञानिकों को मान्य नहीं हो सकी |कहने का तात्पर्य यह है की बस की परिभाषा में आक्रामक व्यावहार करने वाले व्यक्ति के उद्देश्य

या अभिप्राय को ध्यान में नहीं रखा गया है जो एक आवश्यक तथ्य है |

वरकोविज (BERKOWITZ 1975) के अनुसार आक्रामकता से तात्पर्य "दूसरे के प्रति किये गए साभिप्राय क्षति या हानि से होती है" | इस परिभाषा से स्पष्ट है की आक्रामक व्यवहार उस व्यवहार को कहा जाता है |जो दूसरो को सिर्फ हानि या क्षति ही नहीं पहुँचाता है बल्कि हानि या क्षति पहुँचाने का उद्देश्य भी रखता है |

अधिकतर समाज मनोवैज्ञानिकों ने उद्देश्य को मद्देनज़र रखते हुए आक्रामक व्यवहार को परिभाषित किया है |

वेरोन एवं वर्न (BARON & BYRNE, 1987) के अनुसार "आक्रामकता एक ऐसा व्यवहार होता है जिसका लक्ष्य दूसरो को क्षति पहुचाना या घायल करना होता है तथा जिससे बचने के लिए वह (दूसरा व्यक्ति) प्रेरित होता है" |

मेयर्स (MYERS 1988) के अनुसार "आक्रामकता एक ऐसा शारीरिक या शाब्दिक व्यवहार होता है जिसका उद्देश्य दूसरो को चोट पहुँचाना होता है" |

एटकिंसन ,एटकिंसन ,स्मिथ एवं हिलगार्ड (ATKINSON,ATKINSAON,SMITH & HILGARD,1987) के अनुसार "आक्रामकता एक ऐसा व्यवहार होता है जिसका उद्देश्य दूसरो

को शारीरिक रूप से या शाब्दिक रूप से घायल करना होता है या दुसरों के जायदाद को बर्बाद करना होता है"|

टेलर , पेपलाऊ एवं सीयर्स (TAYLOR,PEPLAU & SEARS,2006) के अनुसार "आक्रामकता कोई भी कार्य जिसका अभिप्राय दूसरो को हानि पहुँचाना होता है ,को आक्रामकता कहा जाता है" |

इन प्रमुख परिभाषा में आक्रामकता की व्याख्या में काफी समानता दिखलाई देती है जिसका विश्लेषण करने पर आक्रामक व्यवहार के बारे में निम्नांकित प्रमुख तथ्य प्राप्त होते है-

1. आक्रामकता एक ऐसा व्यवहार होता है जो जानबूझकर दूसरों का या उसकी जायदाद को हानि पहुँचाने के उद्देश्य से किया जाता है | अतः बिना उद्देश्य की परख किये किसी व्यवहार को आक्रामक नहीं कहा जा सकता है | एक दन्त चिकित्सक द्वारा सड़े दांत को उखाड़ने के सिलसिले में रोगी को एकाध चपत लगा देना एक आक्रामक व्यवहार नहीं कहलायेगा क्योंकि चिकित्सक का उद्देश्य वास्तव में रोगी को चोट पहुँचाना नहीं है |दुसरे तरफ अगर एक हत्यारा मंत्री पर गोली चलाता है परन्तु मंत्री जी बाल –बाल बच जाते है |यहाँ पर हत्यारे के व्यवहार का उद्देश्य क्षति पहुँचाना है परन्तु किन्ही कारणों से क्षति नहीं हुयी | क्षति पहुँचाने का उद्देश्य होने के कारण हत्यारे का व्यव्हार निश्चित रूप से एक आक्रामक व्यवहार कहलायेगा|

2. आक्रामक व्यवहार से अभिप्राय प्रकट भी हो सकता है या अप्रकट भी हो सकता है |उपयुक्त उदाहरण में हत्यारे द्वारा किये गए आक्रामक व्यवहार में अभिप्राय प्रकट था |ऐसे आक्रामकता को समाज मनोवैज्ञानिकों ने बैरपूर्ण आक्रामकता कहा है | आक्रामक व्यवहार करने में अभिप्राय छिपा हुआ या अप्रकट भी ही सकता है | जैसे एक राजनैतिक नेता अपने विरोधी नेता के प्रति तटस्थता का भाव रखते हुए भी इस ढंग से प्रचार कर सकता है जिससे वह अपने विरोधी नेता को हराकर चुनाव जीत सके | यहाँ अभिप्राय छिपा हुआ है |ऐसे आक्रामकता को साधनात्मक आक्रामकता कहा जाता है |
3. आक्रामकता में पीड़ित या लक्ष्य व्यक्ति आक्रामक व्यवहार से बचने की कोशिश करता है |इसका मतलब यह हुआ की यदि पीड़ित व्यक्ति इस आक्रामक व्यवहार से बचने की प्रेरणा नहीं रख सकता है , तो उसे आक्रामक व्यवहार नहीं कहा जायेगा |

स्पष्ट हुआ की आक्रामक व्यवहार के कुछ निश्चित विशेषताएँ होती है जिनके आधार पर हम इसकी पहचान कर लेते है और इससे मिलते-जुलते सभी तरह के व्यवहार को आक्रामक व्यवहार नहीं कहते है |

आक्रामकता का स्वरूप समाज विरोधी ,प्रसामाजिक इन दोनों के बीच स्वीकृत कुछ भी हो सकता है | समाज

विरोधी आक्रामकता से तात्पर्य वैसे आक्रामक व्यवहार से होता है जो समाज के नियमों के विरुद्ध होता है | जैसे किसी को गाली देना, तामाचा मारना आदि |इस अर्थ में आक्रामकता एक बुरा व्यवहार माना जाता है |परन्तु कुछ आक्रामकता ऐसे होते है जो समाज के नियमों के अनुकूल होते है जिसे प्रसमाजिक आक्रामकता कहा जाता है | जैसे माता-पिता का अनुशासनात्मक व्यवहार ,युद्ध में कमांडर के आक्रामक आदेश का सिपाहियों द्वारा पालन करना आदि |सभी प्रसामाजिक आक्रामकता के उदाहरण है |इन दोनों के बीच कुछ आक्रामक व्यवहार होते है| जिसे अनुमोदित आक्रामकता कहा जाता है | इस तरह की आक्रामकता में वैसे आक्रामक व्यवहार सम्मिलित होते है | जिसकी जरुरत सामाजिक मानकों के अनुसार तो नहीं होती है परन्तु उन्हें उनकी सीमा के भीतर रखा जा सकता है | आक्रामकता के स्वरूप को ठीक ढंग से समझने के लिए यह भी आवश्यक है की आक्रामक व्यवहार तथा क्रोध में अंतर किया जाय |क्रोध एक आक्रामक अनुभूति होती है जबकि आक्रामक व्यवहार उस अनुभूति का बाहरी रूपांतरण है |व्यक्ति में क्रोध की अनुभूति होने पर सामान्यतः वह आक्रामक व्यवहार करता है परन्तु कभी-कभी वह इन अनुभुतियों को नियंत्रित कर इस तरह व्यवहार करता है मानो उसे क्रोध का अनुभव हुआ ही नहीं |